पाठ - अग्नि पथ

शब्दार्थ-व्याख्या

1. **अग्नि पथ! ……. अग्नि पथ!**

शब्दार्थ –

अग्नि पथ – कठिनाइयों से भरा हुआ मार्ग, आगयुक्त मार्ग

पत्र – पत्ता

छाँह – छाया

व्याख्या – कवि मनुष्यों को सन्देश देता है कि जीवन में जब कभी भी कठिन समय आता है तो यह समझ लेना चाहिए कि यही कठिन समय तुम्हारी असली परीक्षा का है। ऐसे समय में हो सकता है कि तुम्हारी मदद के लिए कई हाथ आगे आएँ, जो हर तरह से तुम्हारी मदद के लिए सक्षम हो लेकिन हमेशा यह याद रखना चाहिए कि यदि तुम्हे जीवन में सफल होना है तो कभी भी किसी भी कठिन समय में किसी की मदद नहीं लेनी चाहिए। स्वयं ही अपने रास्ते पर कड़ी मेहनत साथ बढ़ते रहना चाहिए।

2. **तू न थकेगा कभी!..... अग्नि पथ!**

शब्दार्थ –

शपथ – कसम, सौगंध

व्याख्या – कवि मनुष्यों को समझाते हुए कहता है कि जब जीवन सफल होने के लिए कठिन रास्ते पर चलने का फैसला कर लो तो मनुष्य को एक प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि चाहे मंजिल तक पहुँचाने के रास्ते में कितनी भी मुश्किलें क्यों न आए मनुष्य को कभी भी मेहनत करने से थकेगा नहीं, कभी रुकेगा नहीं और ना ही कभी पीछे मुड़ कर देखेगा।

3. **यह महान दृश्य है …… अग्नि पथ!**

शब्दार्थ –

अश्रु – आँसू

स्वेद – पसीना

रक्त – खून, शोणित

लथपथ – सना हुआ

व्याख्या – कवि मनुष्यों को सन्देश देते हुए कहता है कि जब कोई मनुष्य किसी कठिन रास्ते से होते हुए अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ता है तो उसका वह संघर्ष देखने योग्य होता है अर्थात दूसरों के लिए प्रेरणा दायक होता है। कवि कहता है कि अपनी मंजिल पर वही मनुष्य पहुँच पाते हैं जो आँसू, पसीने और खून से सने हुए अर्थात कड़ी मेहनत कर के आगे बढ़ते हैं।

egyanarchive

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के **उत्तर** दीजिए-

(क) कवि ने 'अग्नि पथ' किसके प्रतीक स्वरूप प्रयोग किया है?

उत्तर- कवि ने 'अग्नि पथ' जीवन के कठिनाई भरे रास्ते के लिए प्रयुक्त किया है। कवि का मानना है कि जीवन में पग-पग पर संकट हैं, चुनौतियाँ हैं और कष्ट हैं। इस प्रकार यह जीवन संघर्ष पूर्ण है।

(ख) 'माँग मत', 'कर शपथ', 'लथपथ' इन शब्दों का बार-बार प्रयोग कर कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर- "माँग मत', 'कर शपथ' तथा 'लथपथ' शब्दों का बार-बार प्रयोग करके कवि मनुष्य को कष्ट सहने के लिए तैयार करना चाहता है। वह चाहता है कि मनुष्य आँसू, पसीने और खून से लथपथ' होने पर भी राहत और सुविधा न माँगे। वह कष्टों को रौंदता हुआ आगे बढ़ता जाए और संघर्ष करने की शपथ ले।

(ग) "एक पत्र-छाँह भी माँग मत' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस पंक्ति का आशय है-मनुष्य जीवन के कष्ट भरे रास्तों पर चलते हुए थोड़ा-सा भी आराम या सुविधा न माँगे। वह निरंतर कष्टों से जूझता रहे।

प्रश्न 2. निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) तू न थमेगा कभी
तू ने मुड़ेगा कभी

उत्तर- इन पंक्तियों का भाव यह है कि हे मनुष्य! जीवन में कितनी भी कठिनाइयाँ आएँ, पर तू उनसे हार मानकर कभी रुकेगा नहीं और संघर्ष से मुँह मोड़कर तू कभी वापस नहीं लौटेगा बस आगे ही बढ़ता जाएगा।

egyanarchive

(ख) चल रहा मनुष्य है।
अश्रु-स्वेद-रक्त से लथपथ, लथपथ, पथपथ

उत्तर- कवि देखता है कि जीवन पथ में बहुत-सी कठिनाइयाँ होने के बाद भी मनुष्य उनसे हार माने बिना आगे बढ़ता जा रहा है। कठिनाइयों से संघर्ष करते हुए वह आँसू, पसीने और खून से लथपथ है। मनुष्य निराश हुए बिना बढ़ता जा रहा है।

प्रश्न 3. इस कविता को मूलभाव क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस कविता का मूलभाव है-निरंतर संघर्ष करते हुए जियो। कवि जीवन को आग-भरा पथ मानता है। इसमें पग-पग पर चुनौतियाँ और कष्ट हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह इन चुनौतियों से न घबराए। न ही इनसे मुँह मोड़े। बल्कि वह आँसू पीकर, पसीना बहाकर तथा खून से लथपथ होकर भी निरंतर संघर्ष करता रहे।

योग्यता-विस्तार

प्रश्न 1. 'जीवन संघर्ष का ही नाम है' इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा का आयोजन कीजिए।

उत्तर-

परिचर्चा विषय: जीवन संघर्ष का ही नाम है

उद्देश्य:

छात्रों में जीवन के संघर्ष के महत्व को समझाना और उनमें सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।

आयोजन विधि:

1. **भूमिका:**
   परिचर्चा की शुरुआत अध्यापक/संचालक एक छोटी सी प्रस्तावना से करें:

"जीवन में कठिनाइयाँ, बाधाएँ और संघर्ष अनिवार्य हैं। इन्हीं संघर्षों से व्यक्ति मजबूत बनता है और सफलता प्राप्त करता है। आज हम इसी विषय पर अपने विचार साझा करेंगे।"

2. **मुख्य बिंदु:**
   चर्चा में भाग लेने वाले छात्र निम्नलिखित बिंदुओं पर अपने विचार रखें:
   - संघर्ष का जीवन में क्या महत्व है?
   - महान व्यक्तित्वों के उदाहरण: महात्मा गांधी, अब्दुल कलाम, कल्पना चावला आदि।
   - संघर्ष से व्यक्ति में कौन-कौन से गुण विकसित होते हैं? (धैर्य, आत्मविश्वास, परिश्रम आदि)
   - असफलता से कैसे सीख लेनी चाहिए?
   - क्या बिना संघर्ष के सच्ची सफलता संभव है?
   - वर्तमान समय में छात्रों को किन संघर्षों का सामना करना पड़ता है?
3. **शैली:**
   - छात्रों को 2-3 मिनट का समय दिया जाए अपने विचार रखने के लिए।
   - कोई भी छात्र एक-दूसरे के विचारों पर तर्कशील ढंग से प्रतिक्रिया दे सकता है।
   - सकारात्मक वातावरण बनाए रखें।
4. **समापन:**
   परिचर्चा के अंत में शिक्षक/संचालक चर्चा का सारांश प्रस्तुत करें:

"जीवन का वास्तविक सौंदर्य संघर्षों में छिपा है। संघर्ष हमें परिपक्व बनाता है, नई ऊंचाइयों तक पहुँचाता है। जो संघर्ष से डरते नहीं, वही इतिहास रचते हैं। इसलिए, जीवन के हर संघर्ष को एक अवसर के रूप में देखें और निरंतर आगे बढ़ते रहें।"

egyanarchive

परियोजना कार्य

प्रश्न 1.

‘जीवन संघर्षमय है, इससे घबराकर थमना नहीं चाहिए’ इससे संबंधित अन्य कवियों की कविताओं को एकत्र कर एक एलबम बनाइए।

उत्तर-

1. हरिवंश राय बच्चन — "अग्निपथ"

(संघर्ष और दृढ़ता का अद्भुत उदाहरण)

"वृक्ष हों भले खड़े,
हों घने, हों बड़े,
एक पत्र छाँह भी माँग मत, माँग मत, माँग मत।
अग्निपथ! अग्निपथ! अग्निपथ!"

---

2. रामधारी सिंह 'दिनकर' — "कोशिश करने वालों की हार नहीं होती"

(संघर्ष में निरंतरता का संदेश)

"लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।"

---

3. सोहनलाल द्विवेदी — "चलो चलते रहें"

(चलते रहने और हार न मानने की प्रेरणा)

"चलो चलते रहें हम,
बिना थके, बिना रुके।
ध्येय पथ पर बढ़ते रहें,
संघर्ष से ना कभी झुके।"

---

4. मैथिलीशरण गुप्त — "अन्याय सहना पाप है"

(संघर्ष को न्याय और धर्म से जोड़ते हुए)

"अन्याय सहना और करना दोनों पाप है,
संघर्ष का यही संदेश हर जन के चित्त में ताप है।"

---

5. माखनलाल चतुर्वेदी — "पुष्प की अभिलाषा"

(त्याग, संघर्ष और देशसेवा की भावना)

egyanarchive

"चाह नहीं मैं सुर्बाला के गहनों में गूंथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि, डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक।"

---

6. नरेंद्र शर्मा — "अभी राह में देर है"
(संघर्ष के पथ पर धैर्य का आह्वान)
"अभी राह में देर है,
अभी हार में देर है,
अभी जीतने का अवसर है,
अभी पथ कठिन है, मगर सुन्दर है।"

(एलबम चित्र)